Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
Volume-13, Issue-2, September-2019
Impact Factor:4.081
www.researchguru.net

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के 'बकरी' नाटक में व्यंग्य

हेमांगनीबहन किरणभाई चौधरी
पीएच.डी.शोधार्थी, हिन्दी भवन सौराष्ट्र विश्वविद्यालय,
E-mail-hkchaudhari14@gmail.com. Mo.No.8758100295

सारांश: *हिन्दी साहित्य के बहुमुखी प्रतिभा संपन्न सर्वेश्वरदयाल सक्सेना एक कवि, नाटककार, कहानीकार, उपन्यासकार, संपादक और पत्रकार के रुप में विख्यात है । उनका जीवन प्रारंभ से ही संघर्षमय रहा है । उन्होंने कई उतार-चढाव, मान-अपमान को देखा है । सर्वेश्वरजी एक सफल नाटककार है । हिन्दी नाटक और रंगमंच पर उनका विशेष योगदान रहा है । उनका बकरी नाटक कई मंचो पर प्रस्तुत किया गया है । उनके नाटक का केन्द्र बिंदु राजनीति एवम् भारतीय ग्रामीण लोग रहे है । उनका साहित्य आम जनता की पीडा, दुःख, दर्द एवं समस्याओं को लेकर उभरा है । आम जनता की दारुण परिस्थिति को प्रस्तुत किया है । सर्वेश्वरजी का बकरी नाटक राजनैतिक व्यंग्य नाटक है । जिससे उस समय की समसामयिक आर्थिक सामाजिक, राजनैतिक परिस्थितियों को प्रस्तुत किया है ।*

शब्द कुंजी: *सर्वेश्वरदयाल सक्सेना का जीवन परिचय, गांधीजी के बकरी के नाम पर व्यंग्य, राजनीति एवं नेताओं पर व्यंग्य, शोषण पर व्यंग्य, चुनाव पर व्यंग्य, भ्रष्टनीति पर व्यंग्य ।*

प्रस्तावना

सर्वेश्वरजी का जन्म 13 सिंतबर 1927 को उत्तरप्रदेश के पिकौरा नामक गाँव में हुआ था । उनके पिता का नाम विश्वेसरप्रसादसिंह और माता का नाम सौभाग्यवती था । उनकी पत्नी का नाम विमला था और दो बेटीया विभा और शुभा थी । पत्नी की मृत्यु के पश्चात् दूसरा विवाह न करके अकेले ही जीवन जीना पसंद किया । उनका परिवार आर्थिक संघर्षो के बीच झुझता रहा । उनकी आर्थिक छबी बताते हुए कहा था - "मेरा परिवार आर्थिक संघर्षो से जूझता आर्य-समाजी विचारों का परिवार था । बचपन आर्थिक तंगी, पारिवारिक कलह, और अनाथ बच्चों के साथ बीता क्योकि मेरा घर अनाथ आश्रम से सटा हुआ था । पिता जीविका कमाने के लिए जी-तोड़ काम करते थे, जो भी सामने आ जाता था- दुकानदारी से लेकर रंगसाजी तक उन्होंने की । माँ स्कूल में पढाती थी। मनोरंजन के नाम पर आर्यसमाज के जलसे थे या गाँव के लोकगीत नाट्य आदि ।"[1]

सर्वेश्वरजी की प्रारंभिक शिक्षा गाँव में हुई । बाद में बस्ती जिले के एंगलो संस्कृत से हाईस्कूल पास किया और क्वीस कॉलेज वाराणसी से इण्टरमीडिएट पास किया । उनकी पढाई के साथ साथ लेखन कार्य भी चलता रहा । उनकी पहली कविता 'आर्यमित्र' में छपी थी । सक्सेनाजी ने बी.ए. और एम.ए. प्रयाग विश्वविद्यालय इलाहाबाद से किया । पढाई के बाद सर्वेश्वरजी ने काम करना शुरु कर दिया उन्होंने 'दिनमान' एवं 'पराग' पत्रिका का सम्पादन कार्य किया । बाद में वे मुख्य उप सम्पादक नियुक्त किए गए । सर्वेश्वरजी कवि, कहानीकार होने के साथ साथ एक नाटककार भी थे । उन्होंने वर्तमान समय में चल रही विषम-परिस्थितियों को देखकर नाटक की रचना की है । 'बकरी' एक राजनीतिक व्यंग्य नाटक है । धन-लोलुप नेता जनता से छल-कपट करके उनका कैसे शोषण करते है ये स्पष्ट रुप से प्रस्तुत किया है ।

गांधीजी की बकरी के नाम पर व्यंग्य

सर्वेश्वरजी ने बकरी नाटक में राजनीति की घिनौनी चाल का पर्दाफाश किया है । गांधीजी के आदर्श विचारों का विपरीत प्रयोग करके भोली जनता की संपत्ति को हथियाने का प्रयास किया । नाटक में नेता यानी दुर्जनसिंह गरीब विपती की बकरी को गांधीजी बकरी

बताता है । उस बकरी के नाम पर लोगों को बेवकूफ बनाते है, उनका शोषण करते है ।

दुर्जन : "यह गांधीजी की बकरी है ।

सिपाही : गांधीजी की ?

दुर्जन : हाँ, हाँ महात्मा गाँधी की मोहनदास करमचंद गांधी । अच्छा बताओं यह क्या देती है ?

सिपाही : दूध ।

दुर्जन : नहीं, कुर्सी, धन और प्रतिष्ठा (कुछ रुककर) अच्छा बताओ, यह क्या खाती है?

सिपाही : घास ।

दुर्जन : नहीं, बुद्धि, बहादूरी और विवेक यह गांधीजी की बकरी है ।"[2]

इस नाटक में गाँधीजी की बकरी के नाम पर लोगों को ठगा गया है । शरीफ इन्सान बने बैठे दुर्जनसिंह, कर्मवीर और सत्यवीर भोली जनता को लूटने की योजना बनाते है । एक गरीब औरत की बकरी हड़पकर उसे गांधीजी की बकरी बना देते है । गाँधीजी की बकरी की जनता से पूँजा करवाते है और चढावे के रुप में दिए जानेवाले धन को हडप लेते है । "स्वाधीनता प्राप्ति के बाद भारतीय जनता, विशेषकर ग्रामीण जनता को जिन हथकंडो द्वारा छला गया है । उन्हें यह नाटक पूरी तल्खी के साथ उजागर कर करता है । गाँधी व लोहिया के नाम पर राजनीति करनेवालों पर यह नाटक व्यंग्य करता है ।"[3]

इस नाटक में गाँधीजी के आदर्श विचारों का लाभ उठाया है । गाँधीवादी नेता गरीब जनता से पहले पैसा दूहते है, फिर वोट और कुर्सी । बकरी के नाम पर 'बकरी शांत प्रतिष्ठान', बकरी संस्थान, बकरी सेवा संघ, 'बकरी मंडल' जैसी संस्थाएँ खुली हुई है । इस तरह नाटक में बकरी के माध्यम से आम जनता के साथ छल-कपट करके उनका शोषण किया है ।

राजनीति एवम् नेताओं पर व्यंग्य

आजादी के बाद भी हमारे देश का हाल वैसा ही है जैसे पहले था । पहले अंग्रेजो ने हमारे देश को लूटा अब नेता भोली जनता को लूट रहे है । बकरी नाटक में डाकु लोग शरीफ ईन्सान बनने का ढोंग करते है और सत्ता पर बैठ जाते है । वो कहते है हम मालामाल भी हो जायेगे और लोग हमारी इज्जत करके हमारे इशारों पर नाचेंगे, क्योंकि उन्हें गाँधीजी की बकरी मिल गई हैं ।

दुर्जन : "भाईयों यह हमारा सौभाग्य है कि हमें गाँधीजी की बकरी मिल गई । कुछ मिलना कुछ खोना भी होता है । हम जितना खोने को तैयार रहते है उससे पता चलता है कि हम कितना पाना चाहते है । इस बकरी ने हमेशा दिया है । आपको आजादी, एकता दी, प्रेम दिया ।"[4]

इस बातों से पता चलता है कि वो सिर्फ सत्ता के जरिये आम लोगों की संपत्ति हथियाना चाहते है । भली जनता उनकी बातों में आकर अपना सब कुछ न्यौछावर कर देते है । आज की वर्तमान स्थिति में यही चल रहा है । जो भी राजनीति में प्रवेश करता है, उसकी आर्थिक परिस्थिति सुधर जाती है ।

शोषण पर व्यंग्य

सर्वेश्वरजी ने शोषण पर भी करारा व्यंग्य किया है । डाकु लोग नेता बनकर आम जनता का शोषण करते है । ग्रामीण औरत की बकरी छिनकर गाँधीजी की बकरी बना देते है । उसके पास जीवन निर्वाह करने का एक ही उपार्जन बकरी थी ।

औरत : "पर हुजूर ई बकरी हमार है । हम गरीब आदमी है, आज किसी और बकरी को गाँधीजी की बकरी बनाय लें । हमरे बच्चे एही के दूध से रुखी रोटी खात है । एही के सहारे हम जीय रहे है ।

दुर्जन : ए औरत, तूं कौंन है ?

औरत : हम आपकी परजा है सरकार

दुर्जन : परजा नही, लोकतंत्र में जनता जनार्दन कहो जनता जनार्दन क्या चाहती है तूं ?

औरत : हम अपनी बकरी चाहत हैं हजूरा ई बकरी हमार है ।"[5]

इस तरह से गरीब औरत की बकरी छिनकर उनका शोषण करते है । उसके साथ जनता का रक्षक सिपाही भी शामिल हो जाता है । वे सब साथ मिलकर गरीब विपती की बकरी को गाँधी की बकरी बनाकर शोषण का प्रारंभ करते है । इस तरह सब गाँववालों का ज्यादा से ज्यादा शोषण करना चाहते है। उन सभी को बकरी की तन-मन-धन से सेवा करनी चाहिए । उनकी हर समस्या का समाधान मिल जायेगा ।

"इस बकरी में दैवी शक्ति है, जिसे पहचानने की जरुरत है । आपका हर दुःख हर तकलीफ यह हल कर सकती है।"[6] इस तरह नेता बकरी के बल पर जनता का आर्थिक शोषण करते है ।

चुनाव पर व्यंग्य

देश की सरकार चुनने का महत्वपूर्ण कार्य है चुनाव । इन चुनावों के द्वारा राष्ट्र की एक सत्ता स्थापित होती है । बकरी नाटक में भी नेतागण जनता को डरा-धमकाकर एवं अच्छे प्रलोभन देकर वोट हांसिल करना चाहते है । विद्रोही युवक इन सब का विरोध करता है तो उसको जेल में डाल दिया जाता है। युवक जनता से कहता हैं- "यही कि वोट चुनाव सब मजाक हो गया हैं । सब झूठ पर चल रहा है । गरीबों की बकरी पकड़कर उनसे पहले पैसा दुहा । अब वोट दुह रहे है, फिर पद और कुर्सी दुहेगे ।"[7] बकरी के थन को चुनाव का चिह्न बनाया है । आजकल चुनावों में विजय पाने के लिए लोगों को खरीद लिया जाता है । चुनाव के समय बडी बडी बात की जाती हैं जो चुनाव जीत जाने के बाद खोखली साबित होती हैं । नाटक में विजय पाने के बाद बकरी उनकी किसी काम की नही रहती और विजय जश्न के लिए बकरी का गोश्त पकाया जाता हैं । इस तरह सर्वेश्वरजी ने चुनाव के समय होने वाले कई हथकडों का चित्रण किया हैं ।

भ्रष्टनीति पर व्यंग्य

सर्वेश्वरजीने बकरी नाटक में सत्ता पर बैठें नेताओं के भ्रष्ट आचरण पर व्यंग्य किया हैं । दुर्जनसिंह, कमर्वीर, सत्यवीर जैसे भ्रष्ट नेता का असली स्वरुप प्रस्तुत किया हैं । "बकरी बदलते हुए तेवर का सीधा-साधा प्रभावशाली नाटक है, जिसमें समसामयिक सामाजिक, राजनीतिक व्यंग्य का तीखापन भी हैं और सारे प्रपंच दबाव को निरंतर झेलती हुई आम जनता का असंतोष, विद्रोही, खीझभरी झुँझलाहट और एक निर्णय भी हैं ।"[8] सच बात तो यह है कि जनता की ईमानदारी का फायदा उठाकर वो अपनी जेब भरते रहते है । गाँधीजी की बकरी के नाम पर इन नेताओं ने आदर्श मूल्यों को तार-तार कर दिया है । भ्रष्ट्र नीति अपनाकर धन का संग्रह करते हैं । इन सभी कार्य में सिपाही भी अपना नैतिक मूल्य भूलकर भ्रष्ट नेता के हाथो कठपूतली बन जाता है । और गाँववालों को लूटने में उसका साथ देता है । गरीब विपती अपनी बकरी माँगने आती हैं तो उसे जेल में डाल देता है। कर्मवीर नकली जज बनकर विपती को 2 साल की सजा सुनाता हैं । इसी तरह सत्ता के लोग पुलिस और न्यायाधीशों को भी खरीद लेती है । इस तरह बकरी नाटक में सत्ता के शोषण एवं अत्याचार को सहन कर रहे जनता की पीडा को प्रस्तुत किया है ।

उपसंहार

इस तरह हम कह सकते हैं कि बकरी नाटक में सर्वेश्वरजी ने उस समय की राजनीतिक सत्ता का घिनौना चित्र प्रस्तुत किया है । सत्ता एवं व्यवस्था पर बैठें लोग छल-कपट करके जनता का शोषण करते है । सर्वेश्वरजी ने कम शब्दों मे बहुत कुछ कह दिया है । वो स्वयं कहते है की "ये तमाम घटनाएँ यह दिखाती है कि यह नाटक देश की वर्तमान राजनीतिक स्थिति में और अधिक सार्थक हो उठा है । और इस स्थिति सें टकारानेवाला मुँह चुरानेवाली ताकतों का और अधिक ध्रुवीकरण कराता है । गांधीवाद का मुखौटा लगाकर आज भी सत्ता की राजनीति की जा रही है और देश की जनता को छला जा रहा है ।"[9]

संदर्भ ग्रंथ

1. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का रचना, कर्म-पृ.17
2. बकरी पृ.19
3. समकालीन हिन्दी नाटक में राजनीतिक व्यंग्य, पृ.86
4. बकरी पृ.22
5. वही, पृ.23
6. साठोत्तर हिन्दी नाटक और राजनीति, पृ.163
7. बकरी पृ.43
8. साठोत्तर हिन्दी नाटक और राजनीति, पृ.149
9. बकरी पृ.7